



RAMAKRISHNA MISSION

SHILLONG

Selected Songs for Vocal Music for all groups

Date: 13.08.22

From: 1:30 p.m.

(1)

কীর্তন একতাল

- পুন্ডরীকাক্ষ মুখোপাধ্যায়

হরি-রস-মদিরা পিয়ে মম মানস, মাত রে।

(একবার) লুটছ অবনীতল, হরি হরি বলি কাঁদ রে ॥

গভীর নিনাদে হরি নামে গগন ছাও রে

নাচো হরি বলে, দু বাছ তুলে,

হরি নাম বিলাও রে।

হরি-প্রেমানন্দ-রসে অনুদিন ভাস রে,

গাও হরিনাম, হও পূর্ণকাম, নীচ বাসনা নাশ রে ॥

(2)

ভৈরবী এক তাল

- অনন্ত লাল বন্দ্যোপাধ্যায়

আমার মা ত্বং হি তারা

তুমি ত্রিগুণধরা পরাৎপরা মা ত্বং হি তারা।

আমি জানি মা ও দীনদয়াময়ী

মা ত্বং হি তারা।

তুমি সন্ধ্যা তুমি গায়ত্রী তুমি জগদ্ধাত্রী গো মা

অকুলের প্রাণকর্ত্রী সদা শিবের মনোহরা।

মা ত্বং হি তারা ॥

তুমি দুর্গমেতে দুঃখহরা, মা ত্বং হি তারা।

তুমি জলে তুমি স্থলে তুমি আদ্যমূলে গো মা,

আছ সর্বঘটে অর্ঘ্যপুটে সাকার আকার নিরাকার

মা ত্বং হি তারা ॥

তুমি সন্ধ্যা তুমি গায়ত্রী তুমি জগদ্ধাত্রী গো মা

অকুলের প্রাণকর্ত্রী সদা শিবের মনোহরা।

মা ত্বং হি তারা ॥

(3)

ঝাঁপতাল

- রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

তোমারেই করিয়াছি জীবনের ধ্রুবতারা।
এ সমুদ্রে আর কভু হব নাকো পথহারা।।
যেথা আমি যাই নাকো, তুমি প্রকাশিত থাকো,
আকুল নয়নজলে ঢালো গো কিরণধারা।।
তব মুখ সদা মনে, জাগিতেছে সংগোপনে,
তিলেক অন্তর হলে না হেরি কুল কিনারা।।
কখনো বিপথে যদি, ভ্রমিতে চাহে এ হৃদি
অমনি ও মুখ হেরি শরমে সে হয় সারা।।

(4)

আশাবরী একতাল

প্রভু ময়্য গোলাম, ময়্য গোলাম, ময়্য গোলাম তেরা ।
তু দেওয়ান, তু দেওয়ান, তু দেওয়ান মেরা ।।
দো রোটি, এক লঙ্গোটি তেরে পাস ময়্য পায়া ।
ভগতি ভাব্ আউর দে নাম তেরা গাঁবা ।।
তু দেওয়ান মেহেরবান নাম তেরা মীরাঁ;
অব্ কি বার দে দীদার মেহর কর ফকীরাঁ ।
তু দেওয়ান মেহেরবান নাম তেরা বারেয়া;
দাস কবীর শরণে আয়া চরণ লাগে তারেয়া ।

प्रभु मैं गुलाम, मैं गुलाम, मैं गुलाम तेरा,
तू दीवान तू दीवान, तू दीवान मेरा ।
दो रोटी एक लंगोटी, तेरे पास मैं पाया,
भगति भाव दे और, नाम तेरा गाया ।
तू दीवान मेहरबान, नाम तेरा बढया,
दास कबीर शरण में आया, चरण लागे ताराया ।।

(5)

কীর্তন

চিদানন্দ সিঞ্চনীরে প্রেমানন্দের লহরী।
মহাভাব রাসলীলা কি মাধুরী মরি মরি ।
বিবিধ বিলাস রঙ্গ প্রসঙ্গ, কত অভিনব ভাবতরঙ্গ,
ডুবিছে উঠিছে করিছে রঙ্গ নবীন নবীন রূপ ধরি ।
(হরি হরি বলে)
মহাযোগে সমুদায় একাকার হইল,
দেশ-কাল, ব্যবধান, ভেদাভেদ ঘুচিল
(আশা পুরিল রে, আমার সকল সাধ মিটে গেল)
এখন আনন্দে মাতিয়া দুবাছ তুলিয়া
বল রে মন হরি হরি ।

(6)

प्रभु मेरे अवगुण चित ना धरो ।
समदर्शी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो ॥
एक लोहा पूजा मे राखत, एक रहत व्याध-घर परो ।
पारस के मन द्विधा नहीं है
दोऊ एक कंचन करो ॥
एक नदिया एक नार बहावत मैलो नीर भरो;
जब मिली दोनों एक वरण भये सुरसरी नाम भयो ॥
एक जीव एक ब्रह्म कहावत सूरदास झगड़ों,
अज्ञानी से भेद होवे, ज्ञानी काहे भेद करो ॥

प्रभु मेरे अवगुण चित न धरो ।
समदर्शी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो ॥
ईक लोहा पूजा मे राखत, ईक रहत व्याध-घर परो,
पारस के मन द्विधा नहीं है, दुहू एक काषण करो ॥
ईक नदिया ईक नार कहावत मैलो नीर भरो;
जब मिलि दोनो एक वरण भये सुरसुरि नाम परो।
ईक जीव ईक ब्रह्म कहावत सूरदास बागरो,
अज्ञानसे भेद होवे ज्ञानी काहे भेद करो ॥

(7)

तुझसे हमने दिल को लगाया, जो कुछ है सो तू ही है ।
एक तुझको अपना पाया, जो कुछ है सो तू ही है ॥
सबके मकां दिल का मकीं तू, कौन सा दिल है जिसमें नहीं तू ।
हरेक दिल में तू ही समाया, जो कुछ है सो तू ही है ॥
क्या मलायक क्या इन्सान, क्या हिन्दू क्या मुसलमान ।
जैसे चाहा तूने बनाया, जो कुछ है सो तू ही है ॥
काबा में क्या, देवालय में क्या, तेरी परस्तिश होगी सब जाँ ।
आगे तेरे सिर सबने झुकाया, जो कुछ है सो तू ही है ॥
अर्श से लेकर फर्श जमीं तक और जमीं से अर्श वरी तक ।
जहाँ मैं देखा तू ही नजर आया जो कुछ है सो तू ही है ॥
सोचा समझा देखा-भाला, तुम जैसा कोई न ढूँढ़ निकाला ।
अब ये समझ में ' जफर ' के आया, जो कुछ है सो तू ही है ॥

तुब्से हमने दिल को लगाया, जो कुछ है सो तू ही है ।
एक तुब्को अपना पाया जो कुछ है सो तू ही है ॥
सबका मकान दिलका मकीं तू, कौनसा दिल है जिसमें नहि तू ।
हरेक दिल में तू ही समाया , जो कुछ है सो तू ही है ॥
क्या मलायक, क्या इन्सान, क्या हिन्दू क्या मुसलमान ।
ज्यासे चाहा तूने बनाया, जो कुछ है सो तू ही है ॥
काबा में क्या, देवालय में क्या, तेरी परस्तिश होगी सब जान ।
आगे तेरे सिर सबने झुकाया, जो कुछ है सो तू ही है ॥
अर्श से लेकर फर्श जमीन तक और जमीन से अर्श वरी तक ।
जहाँ मैं देखा तू ही नजर आया, जो कुछ है सो तू ही है ॥
सोचा समझा देखा भाला, तुम ज्यासा कोई न ढूँढ निकाला ।
अब ये समझ में ' जफर ' के आया, जो कुछ है सो तू ही है ॥

(8)

(বিঁঝিট-খাম্বাজ, একতাল)

কতদিনে হবে সে প্রেম সঞ্চারণ।
হয়ে পূর্ণকাম বলব হরিনাম, নয়নে বহিবে প্রেম অশ্রুধার ॥
কবে হবে আমার শুদ্ধ প্রাণমন, কবে যাব আমি প্রেমের বৃন্দাবন,
সংসার বন্ধন হইবে মোচন, জ্ঞানাঞ্জনে যাবে লোচন আঁধার।
কবে পরশমণি করি পরশন, লৌহময় দেহ হইবে কাঞ্চন,
হরিময় বিশ্ব করিব দর্শন, লুটাইব ভক্তি পথে অনিবার ॥
(হায়) কবে যাবে আমার ধরম করম, কবে যাবে জাতি কুলের ভরম,
কবে যাবে ভয় ভাবনা সরম, পরিহরি অভিমান লোকাচার ॥
মাখি সর্ব অঙ্গে ভক্ত পদ ধূলি কাঁধে লয়ে চির বৈরাগ্যের ঝুলি,
পিব প্রেম বারি দুই হাতে তুলি, অঞ্জলি অঞ্জলি প্রেম যমুনার ॥
প্রেমে পাগল হয়ে হাসিব কাঁদিব, সচ্চিদানন্দ সাগরে ভাসিব,
আপনি মাতিয়ে সকলে মাতাব, হরিপদে নিত্য করিব বিহার ॥

—নীলকণ্ঠ মুখোপাধ্যায়

(9)

কীর্তন একতাল

- ত্রৈলোক্যনাথ সান্যাল

চিন্তয় মম মানস হরি চিদঘন নিরঞ্জন।
কিবা, অনুপম ভাতি, মোহন মূর্তি, ভকত-হৃদয়-রঞ্জন ॥
নবরাগে রঞ্জিত, কোটি শশী-বিনিন্দিত;
কিবা বিজলি চমকে, সেরূপ আলোকে, পুলকে শিহরে জীবন।
হৃদি-কমলাসনে, ভজ তাঁর চরণ,
দেখ শান্ত মনে, প্রেম নয়নে, অপরূপ প্রিয়-দর্শন।
চিদানন্দ-রসে, ভক্তিয়োগাবেশে, হও রে চিরগমন ॥